परमात्म ऊर्जा

यह जो मन है यह एक बड़ी कैमरा है। हर सेकण्ड का चित्र इसमें खैंचा नहीं जाता। कैमरा तो सभी के पास है लेकिन कोई कैमरा नज़दीक के चित्र को खींच सकती है और कोई कैमरा चन्द्रमा तक भी फोटो खैंच लेती है। है तो वह भी कैमरा, वह भी कैमरा। और यहाँ की छोटी-मोटी भी कैमरा तो है ना! तो हरेक के पास कितना पॉवरफुल कैमरा है! जब वह लोग चन्द्रमा से यहाँ, यहाँ से वहाँ का खैंच सकते हैं तो आप साकार लोक में रहते निराकारी दुनिया का, आकारी दुनिया का व इस सारी सृष्टि के पास्ट व भविष्य का चित्र नहीं खैंच सकते हो? कैमरा तो पॉवरफुल बनाओ जो उसमें जो बात, जो दृश्य जैसा है वैसा दिखाई दे, भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई नहीं दे। जो है जैसा है, वैसे स्पष्ट दिखाई दे। इसको कहते हैं पॉवरफुल। फिर बताओ कोई भी समस्या, समस्या का रूप होगा या खेल अनुभव होगा? तो अब की स्टेज के अनुसार ऐसी स्टेज बनाओ, तब कहेंगे तीव्र पुरुषार्थी। अगर ऐसे कैमरा द्वारा चित्र पहले खींचते जाते हैं, उसके बाद साफ कराने के बाद मालूम पड़ता है कि कैसे खींचे हैं। इसी रीति से सारे दिन में जो अपने-अपने ऑटोमेटिक कैमरा द्वारा अनेकानेक चित्र खैंचते रहते हो, रात को फिर बैठ कर क्लीयर देखना चाहिए कि किस प्रकार के चित्र आज इस कैमरे द्वारा खींचे। और जैसे हैं वैसे ही चित्र खींचे व कुछ नीचे-ऊपर भी हो गया! कभी-कभी कैमरा ठीक न होने के कारण सफेद चीज़ भी काली हो जाती है, रूप बदल जाता है, फीचर्स भी कब बदल जाते हैं। तो यहाँ भी कभी-कभी कैमरा ठीक क्लीयर न होने के कारण बात समस्या बन जाती है। उनकी रूपरेखा बदल जाती है, उनका रंग-रूप भी बदल जाता है। यथार्थ का अयथार्थ रूप भी कब खैंचा जाता है। इसलिए सदैव अपने कैमरा को क्लीयर और पॉवरफुल बनाओ। अपने को सेवाधारी समझने से त्याग, तपस्या सभी आ जाता है। सेवाधारी हूँ और सेवा के लिए ही यह जीवन है, यह समझने से सेकण्ड भी सेवा बिगर नहीं जायेगा। तो सदा अपने को सेवाधारी समझते चलो। और अपने को बुजुर्ग समझना चाहिए, तो फिर छोटी-मोटी बातें खिलौने दिखाई देंगी, रहमदिल बन जायेंगे। तिरस्कार के बदले तरस आयेगा।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'खुशहाल महिला, खुशहाल परिवार' कार्यक्रम में छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन, गांधी आश्रम संचालिका दमयंती पाणि, बाल संप्रेषण गृह अधीक्षक सरोज छारी, हम फाउण्डेशन की प्रांतीय उपाध्यक्ष कोमल टिकरिया, इनरव्हील क्लब अध्यक्ष रश्मि तिवारी, दर्शना वृद्ध आश्रम संचालिका प्रभा विदु, गहोई समाज अध्यक्ष संगीता टिकरिया, जैन समाज समर्पण महिला मिलन मंडल अध्यक्ष पूजा जैन, डॉ. संगीता नौगरिया, सुनीता पथोरिया, ब्र.कु. कल्पना, ब्र.कु. रीना सहित शहर की 200 से अधिक महिलायें शामिल रहीं।

कथा सरिता

एक व्यापारी व्यापार करने के लिए शहर से दूसरे शहर जाता था, बीच में रेगिस्तान का कुछ इलाका पड़ता था। वह आदमी एक निगेटिव सोच वाला इंसान था हमेशा शिकायत करता था कि मेरे पास ये नहीं है, वो नहीं है इसकी कमी है, उसकी कमी है।

एक दिन वह रेगिस्तान में से गुजर रहा था तभी उसकी पानी की बोतल खाली हो जाती है उसे बड़ी जोर से प्यास लगती है, लेकिन रेगिस्तान में पानी ना मिलने की वजह से उसे बहुत गुस्सा आता है और बोलता है कि खराब जगह है ना कोई पेड़ है ना पानी, रास्ता भी लम्बा है, रेगिस्तान पार करना पड़ता है।

तभी आसमान की तरफ देख करके कहता है कि भगवान ये कैसी जगह बना दी है आपने। अगर मेरे पास में बहुत सारा पानी होता, बहुत सारे संसाधन होते तो इस जगह पर हरियाली कर देता, बहुत सारे पेड़ लगा देता। वह आदमी ऊपर देखकर ये सब बातें कह रहा होता है और ऐसा लग रहा था कि जैसे ऊपर वाले से जवाब की प्रतीक्षा कर रहा हो कि भगवान कुछ कह दे।

वह कुएं के पास पहुंचा और देखा कि कुआं पूरी तरह पानी से भरा हुआ है परन्तु वह आदमी निगेटिव सोच वाला था और हमेशा शिकायत करता रहता था और फिर से आसमान की तरफ देखते हुए बोला भगवान पानी से भरा हुआ कुआं तो दे दिया लेकिन पानी निकालूंगा कैसे? तो इस बार जब उसने नीचे देखा तो फिर से चमत्कार हुआ उसे कुएं के पास रस्सी और बाल्टी दिखाई दी, लेकिन आदमी ने फिर से ऊपर देखा और बोला भगवान अब इस पानी को ले जाऊंगा कैसे?

तभी उसको एहसास हुआ जैसे उसके पीछे कोई है, उसने पीछे मुड़कर देखा तो एक ऊंट खड़ा हुआ होता है। वह पूरी तरह से घबरा गया और सोचने लगा कि ये तो सच में हो रहा है।

मैंने बातों-बातों में कह तो दिया लेकिन अब मुझे यहाँ हरियाली करनी पड़ेगी और पेड़ लगाने की ज़िम्मेदारी लेनी पड़ेगी।

आदमी को पानी से भरा कुआं मिल गया, बाल्टी और रस्सी मिल गई, पानी को ले जाने के लिए ऊंट भी मिल गया, सबकुछ मिल गया। अब वह आदमी सोच रहा था कि बातों-बातों में मैंने ये क्या बोल दिया! ये तो गड़बड़ हो गयी। अब वह अपनी ज़िम्मेदारी से बचने के लिए तेजी से दौड़कर भागने लगा। तभी एक कागज उड़ते हुए आया और उसके शरीर से चिपक गया। उसने जब उस कागज को देखा तो उसपर लिखा था कि मैंने तुम्हें पानी दिया, कुआं दिया, रस्सी और बाल्टी दी, पानी ले जाने के लिए साधन दिया फिर भी क्यों बचकर भाग रहे हो? उस आदमी को लगा कि मेरे साथ पता नहीं क्या हो रहा है। वह दौड़ते-दौड़ते रेगिस्तान को पार कर लेता है लेकिन उस रेगिस्तान को हरा-भरा नहीं बना सका।

सीख : हम हमेशा शिकायतें ढूंढा करते हैं, अपनी ज़िम्मेदारी से बचकर भाग रहे होते हैं। ये कहानी हमें सिखाती है कि लाइफ में हम जो कुछ भी कर रहे हैं 100 प्रतिशत ज़िम्मेदारी हमारी है कि उस काम को बिना किसी शिकायत के पूरा करें और दूसरों को दोष देना, उनकी गलतियां बताना बंद कीजिए, अपनी गलतियों को सुधारना शुरू कीजिए।

एक बार एक शिकारी शिकार करने के लिए जंगल में पहुंचा। उसने अपने तीर पर बहुत खतरनाक ज़हर लगाया और शिकार को निशाना बना करके उसने तीर को छोड़ा लेकिन उसका तीर चूक गया और तीर एक पेड़ पर जा लगा। वह पेड़ बहुत ही हरा-भरा था और बहुत सारे तोते उस पेड़ पर रहते थे।

जैसे ही वह ज़हरीला तीर उस पेड़ पर जाकर लगा वह पेड़ धीरे-धीरे सूखने लगा और उस पेड़ पर जो भी तोते रहते थे वह एक-एक करके उस पेड़ को छोड़कर जाने लगे।

उस बड़े से पेड़ के कोटर में एक बहुत ही बूढ़ा तोता रहता था, जो बहुत ही धर्मात्मा और अच्छे मन का था। सभी तोते उस पेड़ को छोड़कर जाने लगे थे लेकिन वह बूढ़ा तोता जाता और दाना लेकर के आता फिर उसी कोटर में आ करके बैठ जाता था। परन्तु उस पेड़ को छोड़ने को तैयार नहीं था।

बूढ़े तोते के साथियों ने कई बार आकर उसे समझाया कि यह पेड़ सूख रहा है और किसी दिन गिर भी जायेगा, चलो किसी और पेड़ पर चल कर रहा जाये परन्तु वह बूढ़ा तोता वहाँ से जाने को तैयार नहीं हो रहा था।

अब यह बात देवराज इंद्र तक पहुंची। उन्हें बताया गया कि एक तोता है वह जिस पेड़ पर रहता है उस पेड़ पर एक जहरीला तीर लगने के कारण सूखने, गिरने और खत्म होने के कगार पर आ पहुंचा है और एक बूढ़ा तोता अभी भी वहीं पर रह रहा है वह दाना लेकर आता है और वहीं पर रहता है जबकि उस जंगल में बहुत सारे पेड़ हैं लेकिन वह उसी पेड़ पर रह रहा है।

देवराज इंद्र प्रगट हुए और उस बूढ़े तोते से कहने लगे कि आप बहुत धर्मात्मा हैं बहुत ही अच्छे मन के हैं लेकिन आप इस पेड़ को छोड़कर किसी और पेड़ पर चले जाइये क्योंकि यह पेड़ कुछ ही दिनों में गिर जायेगा। तालाब के पास में बहुत से बड़े-बड़े, हरे-भरे पेड़ हैं, बड़े-बड़े कोटर हैं उन पेड़ों पर फल भी लगे हुए हैं उन्हें वहीं पर तोड़कर खा सकते हैं, परन्तु यहाँ से आप चले जाओ।

तोता बोला माफ कीजिएगा, इस पेड़ ने मुझे जीवन दिया है, शिकारियों से मेरी रक्षा की है, हर मौसम में मेरे साथ रहा है। ये कोटर मेरा घर है, यहाँ मैं पला-बढ़ा हूँ और इस पेड़ को मैं छोड़कर कैसे जा सकता हूँ। इस पर संकट आया है तो क्या मैं इसे छोड़कर चला जाऊं? मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता।

देवराज इंद्र तोते की इस बात से बहुत ही प्रसन्न हुए उन्होंने तोते से कहा मैं आपकी इस बात से बहुत ही खुश हूँ, मांगो जो आपको मांगना हो। उस बूढ़े तोते ने कहा मुझे बस इतना मांगना है कि जिस पेड़ ने मुझे जन्म दिया, जहाँ मैं रहा, पला-बढ़ा, जिसे आप मेरी जन्म भूमि कह सकते हैं आप इसे फिर से वैसा हरा-भरा कर दो जैसा यह था।

देवराज इंद्र ने अमृत से उस पेड़ को सींच दिया और पहले की तरह हरा-भरा कर दिया। अब वापस से उस पेड़ पर आकर के बाकी तोते रहने लगे। वह बूढ़ा तोता कुछ समय तक और ज़िन्दा रहा फिर उसकी मृत्यु हो गयी और वह स्वर्ग में चला गया।

सीख : इस कहानी से हमें ये सीख मिलती है कि आप किसी के सुख के साथी बनें या न बनें लेकिन आपको हमेशा किसी के दुःख के साथी ज़रूर बनना चाहिए।